JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"राजकीय विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालय के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन"

मन्जू बाला (शोधार्थी)
शिक्षा विभाग
डॉ० अरूण कुमार (एसोसिएट प्रोफेसर)
शिक्षा विभाग
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रस्तावना

वर्तमान विज्ञान व तकनीकी के युग में वैज्ञानिक खोजों व आविष्कारों के कारण दुनिया में तेजी से बदलाव आ रहा है। इन परिवर्तनों ने मानव जीवन को तीव्र रूप से प्रभावित किया है। बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं यथा शैशवावस्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास भी इससे प्रभावित हुआ है।

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा स्पष्ट होता है कि वातावरण में परिवर्तनों का सर्वाधिक प्रभाव किशोरावस्था पर पड़ा है। इस अवस्था में सांवेगिक तनाव अपनी चरम सीमा पर होता है क्योंकि इस अवस्था में बालकों में तीव्र गति से शारीरिक तथा ग्रथिल परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था के प्रारम्भ में सांवेगिक तीव्रता अधिक होती है। गैसेल तथा उनके सहयोगियों ने अपने एक अध्ययन में पाया कि 13–14 साल के बालक बालिका दोनों में ही क्रोध संवेग की तीव्रता अधिक होती है परन्तु 18–19 साल होते होते क्रोध की तीव्रता में कमी आ जाती है। अब वे सांवेगिक रूप से परिपक्व हो जाते हैं। और अपने संवेग को नियंत्रित कर सामाजिक रूप से अनुमोदित ढंग से इसकी अभिव्यक्ति करना सीख लेते हैं। मानव जीवन में संवेगों का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य को संवेगों द्वारा विभिन्न कार्यों को करने की प्रेरणा शक्ति मिलती है।

संवेगों के उदय होने पर व्यक्ति में कार्यों को करने की प्रेरणा शक्ति मिलती है। संवेगों के उदय होने पर व्यक्ति में अतिरिक्त शक्ति का संचार होता है तथा वह ऐसे कार्य कर दिखाता है जो सामान्य स्थिति में उसके लिए उचित प्रतीत नहीं होते हैं। संवेगों के उत्पन्न होने पर मानसिक तथा शारीरिक स्थिति में परिवर्तन आ जाता है।

गुप्ता एवं गुप्ता[2] के अनुसार,'संवेग वास्तव में मानसिक उपद्रव की अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति अपनी सामान्य स्थिति में नहीं रहता है।' संवेग के कारण कभी कभी व्यक्ति सामान्य क्रियाएं नहीं कर पाता है। इस प्रकार के परस्पर विरोधी परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि संवेग एक जटिल भावात्मक मानसिक क्रियाएं हैं। संवेग मानव व्यवहारों के प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस परिप्रेक्ष्य में यह जानना आवश्यक होगा कि यह किस प्रकार विकसित होते हैं। तथा व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन, व्यावसायिक अभिरूचि तथा आकांक्षाओं का विकास भी होता रहता है।

संवेग का प्रत्यय

यद्यपि संवेग सम्प्रत्यय की कोई निश्चित परिभाषा, नहीं दी जा सकती है। किन्तु इसके अर्थ को समझना बहुत आवश्यक है। हम दुखी, भयभीत तथा क्रोधित होने पर जिन भावनाओं का अनुभव करते हैं वे सभी संवेग में सम्मिलित होती हैं तथा इन संवेगों द्वारा व्यक्ति क्रियाशील होता है। संवेग शब्द अंग्रेजी के इमोशनल का हिन्दी पर्याय है जो लेटिन भाषा से लिया गया है। **युंग के अनुसार,** ''संवेग मनोवैज्ञानिक कारणों से उत्पन्न व्यक्ति का तीव्र उपद्रव है जिसके अन्तर्गत व्यवहार, चेतन तथा अनुभव जैसी क्रियायें सम्मिलित रहती हैं। थामसन के अनुसार सवेग में भावनायें विचार और कभी–कभी प्रत्यक्षण भी शामिल होता है। यह धैर्य, क्रोध, प्रेग जैसी मानवीय भावनाओं के लिए प्रयुक्त किया जाता है।''

लिण्डजे, हाल तथा थामसन ने संवेगों के निम्न प्रकार बताये हैं –

स्नेह– स्नेह एक धनात्मक संवेग है जिसकी शुरूआत बचपन से ही हो जाती है तथा यह उन व्यक्तियों में भली भांति विकसित होता है। जिनको दूसरों से प्रेम मिलता है और दूसरों को प्रेम देता है। जब व्यक्ति में किसी एक दूसरे व्यक्ति, पशु, स्थान तथा वस्तु के प्रति आकर्षण विकसित हो जाता है तो इस संवेगात्मक स्थिति को स्नेह अथवा प्रेम कहते हैं।

क्रोध– क्रोध उस संवेग को कहा जाता है जिसकी उत्पत्ति एक ऐसे अबोध से उत्पन्न होती हैं जिसको दूर किया जा सकता है। मनुष्य में ईर्ष्या, द्वेष, इच्छाओं का विरोध एवं अन्य बाक्तियों द्वारा प्रबल दोषारोपण के द्वारा क्रोध संवेग की उत्पत्ति होती है।

आनन्द एवं उल्लास– आनन्द एक प्रकार का धनात्मक संवेग होता है जिस समय आनन्द में तीव्रता से कमी आती है तब इसे खुशी कहा जाता है। परन्तु जब इसमें तीव्रता से वृद्धि होती है तब इसे उल्लास कहा जाता है। व्यक्ति शारीरिक रूप से अच्छा अनुभव करक अचानक किसी आवाज को सुनकर तथा जो वह चाहता है उसकी प्राप्ति के उपरान्त आनन्द प्राप्त करते हैं।

भय एवं दुश्चिन्ता–भय एवं दुश्चिन्ता एक दूसरे से गहन रूप से सम्बन्धित सर्वेग हैं। भय उस संवेगात्मक स्थिति को बताता है जिसमें किसी एक खतरनाक वस्तु अथवा घटना के प्रति व्यक्ति को प्रतिक्रिया करनी पड़ती है। जिससे वह आसानी से छुटकारा नहीं पा सकता। दुश्चिन्ता दीर्घकालिक डर का दूसरा नाम है। दुश्चिन्ता में मानसिक स्थिति स्पष्ट नहीं होती है। किन्तु यह संचयी होता है एवं प्रत्येक समय यह एक निश्चित समय सीमा तक बढ़ता जाता है।

ईर्ष्या– ईर्ष्या एक जटिल प्रकार का संवेग होता है जिसमें डर तथा क्रोध दोनों मिले होते हैं। जब व्यक्ति पहले से मिल रहे अनुराग में वास्तविक या काल्पनिक कमी महसूस करता है तब उसमें ईर्ष्यों का संवेग जन्म लेता है। ईर्ष्या मूलतः सामाजिक परिस्थिति में उत्पन्न होती है। ईर्ष्या संवेग की अभिव्यक्ति व्यक्ति में सीधे अथवा परोक्ष रूप से होती है।

अनिच्छा– जब मनुष्य के सामने न तो कोई स्पष्ट लक्ष्य होता है और न ही अपनी उपलब्धि से कोई प्रसन्नता होती है और उसी प्रकार से व्यक्ति के सामने ऐसा कार्य होता है जिसमें न उसकी अभिरूचि होती है और न ही इच्छा होती है। ऐसी परिस्थिति में उसमें एक विशेष संवेगात्मक स्थिति पाई जाती है जिसे अनिच्छा कहा जाता है।

परिपक्वता

कोई व्यक्ति जैसे–जैसे परिपक्व होता जाता है उसकी संवेगात्मक स्थिरता, सामाजिक समायोजन, व्यावसायिक अभिरूचि तथा जीवन की आकांक्षायें भी विकसित होती जाती है। सार्टोन तथा उनके सहयोगियों के अनुसार जीव में विकास तथा गर्दन का पूरा होना परिपक्वता कहलाता है। एक परिपक्व व्यक्ति स्वतंत्रता का आनन्द उठाता है जो कि अपरिपक्व व्यक्ति को उपलब्ध नहीं होता। अपरिपक्व व्यक्ति को अधिकतर बड़े लोगों के नियंत्रण में रहना पड़ता है।

शोध के उद्देश्य

1. राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियोंकी संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों कीसंवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य

सम्बन्धित ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में ही उपलब्ध है। अन्य प्राणियों से भिन्न मानवः जाति अपने उद्भव के समय से ही निरन्तर खोज की ओर उन्मुख है। नवीन साहित्य का सृजन एवं पूर्व ज्ञान में नवीनता लाना ही अनुसंधान का लक्ष्य है। और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुसंधानकर्ता को सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं पुनरावलोकन करना अति आवश्यक होता है। कुछ सम्बन्धित साहित्य का वर्णन इस प्रकार है।

धामी (1974) ने बुद्धि संवेगात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के मेधावी छात्रों की सफलता के सम्बन्ध में अध्ययन किया। जिसके प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैं –

1. बुद्धि सांवेगिक परिपक्वता, विद्यार्थियों की उच्च उपलब्धि को समान रूप से प्रभावित करती है।
2. बुद्धि तथा सांवेगिक परिपक्वता में अंतःसम्बन्ध पाया जाता है।
3. सामाजिक आर्थिक स्तर उच्च उपलब्धि में एक अन्तर सम्बन्ध पाया जाता है।

इस अध्ययन के उपरान्त उद्देश्यों के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले

1. संवेगात्मक परिपक्वता तथा बुद्धि में एक निकट उच्च सम्बन्ध पाया जाता है।
2. संवेगात्मक परिपक्वता एवं बुद्धि विद्यालयी उपलब्धि में प्रभावी योगदान देती है।
3. सामाजिक आर्थिक अवस्था का संवेगात्मक परिपक्वता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

लेखी, विनीता (2005) ने अपने अध्ययन में आंकड़ों के वि लेशण के प चात् बालकों में बालिकाओं की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता का स्तर कम प्राप्त हुआ। नगरीय छात्रों में गांव के छात्रों की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता का स्तर अधिक था। निजी विद्यालय के छात्रों में सरकारी छात्रों की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता अधिक थी। अनुसूचित जाति से सम्बन्धित छात्रों में सामान्य छात्रों की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता अधिक थी। अनुसूचित जाति से सम्बन्धित छात्रों में सामान्य जाति से जुड़े छात्रों की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता का स्तर कम पाया गया था।

गीता व विजय लक्ष्मी (2006) ने कि ोर पर एक अध्ययन किया तथा इस मनोवैज्ञानिक अध्ययन में उन्होंने निम्नलिखित निश्कर्श निकाले–

1. युवाओं में लैंगिक भेद, तनाव तथा आत्मवि वास को प्रभावित नहीं करता।
2. उच्च संवेगात्मक परिपक्वता वाले युवा निम्न संवेगात्मक परिपक्वता वाले युवाओं की तुंलना में अधिक तनाव तथा सहन करने की क्षमता रखते हैं। तथा उनमें आत्मवि वास भी अधिक मात्रा में था।
3. युवाओं के माता–पिता की ि ाक्षा का स्तर उनके तनाव व आत्मवि वास को प्रभावित करता है।
4. परिवार की आर्थिक स्थिति युवाओं के तनाव व आत्मवि वास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं डालती है।
5. तनाव तथा आत्म वि वास पर जन्म कर्म का कोई प्रभाव नहीं पड़ता

अध्ययन की विधि–प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक विधि को लाया गया है।

न्यादर्श–प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद मेरठ के राजकीय विद्यालय सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों में सत्र 2022–23 अध्ययन करने वाले विद्यार्थी जनसंख्या के अन्तर्गत लिये गए है।

चयनित विद्यालय का स्वरूप–

विद्यालय का स्वरूप	कला वर्ग		विज्ञान वर्ग		योग
	छात्र	छात्रायें	छात्र	छात्रायें	
राजकीय विद्यालय	25	25	25	25	100
सरस्वती शिशु मन्दिर	25	25	25	25	100
योग	50	50	50	50	200

प्रयुक्त उपकरण–अतः प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा डॉ० यशवीर सिंह तथा महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी 2005 का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण की विश्वसनीयता– प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयुक्त संवेगात्मक परिपक्वता मापनी की विश्वसनीयता का निर्धारण पुर्नपरीक्षण विधि द्वारा किया गया तथा इसकी विश्वसनीयता गुणांक 0.75 पाई गई।

प्रयुक्त परीक्षण की वैधता–प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त संवगात्मक परिपक्वता मापनी की वैधता बाह्य कसौटी (सिन्हा एवं सिंह द्वारा निर्मित समायोजन अनुसूची के (घ) क्षेत्र) के सापेक्ष निर्धारित की गयी है। प्रस्तुत अध्ययन में वैधता गुणांक 0.64 पाया गया।

प्रस्तुस अध्ययन के प्रदतों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्त्री ने अपने शोध विषय की परिकल्पलाओं हेतु आवश्यक समंकों का संकलन, सारणीयन, प्रस्तुतीकरण एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण एवं विवेचन किया है, जो निम्नानुसार

परिकल्पना 1

राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी का मान

विद्यालय का स्वरूप	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	स्वतंत्रता का अंश	t
राजकीय विद्यालय	100	78.5	15.70	198	6.007
सरस्वती शिशु मन्दिर	100	95.2	23.00		

t .05=1.97

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि राजकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 78.5 है जो इन विद्यार्थियों के अत्याधिक स्थायी संवेगात्मक परिपक्वता होने का द्योतक है। सरस्वती विद्या मन्दिर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 95.2 है जो इन विद्यार्थियों की अस्थायी संवेगात्मक परिपक्वता के होने का द्योतक है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों में अधिक असमानता है।

राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य टी मान 6.007 पाया गया यह मान टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता उनके विद्यालयों के स्वरूप से प्रभावित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता अधिक होती है।

परिकल्पना 2

राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी का मान

विद्यालय का स्वरूप	संख्या	मध्यमान	मनक	स्वतंत्रता का अंश	t
राजकीय विद्यालय (छात्र)	50	74.1	16.30	98	4.765
सरस्वती शिशु मन्दिर (छात्र)	50	92.3	21.6		

t 0.5=1.98

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि राजकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन छात्रों के अत्यधिक स्थायी परिपक्व होने का द्योतक है। सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन छात्रों की अस्थायी संवेगात्मक परिपक्वता का द्योतक है। प्राप्त मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों में अधिक असमानता है।

राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य टी मान 4.764 पाया गया यह मान टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। अतः विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता उनके विद्यालयों के स्वरूप से प्रभावित होती है। इसका तात्पर्य यह है कि छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता उनके विद्यालयों के स्वरूप से प्रभावित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता अधिक होती है।

परिकल्पना 3

राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी का मान

विद्यालय का स्वरूप	संख्या	मध्यमान	मनक	स्वतंत्रता का अंश	t
राजकीय विद्यालय (छात्रायें)	50	81.5	14.00	98	3.702
सरस्वती शिशु मन्दिर (छात्रायें)	50	98.9	26.70		

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि राजकीय विद्यालयों की माध्यमिक स्तरीय छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन छात्राओं की मध्य श्रेणी की स्थायी संवेगात्मक परिपक्वता का द्योतक है। सरस्वती विद्या मन्दिर की माध्यमिक स्तरीय छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन छात्राओं की स्थायी संवेगात्मक परिपक्वता का द्योतक है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर की माध्यमिक स्तरीय छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों में अधिक असमानता है।

राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य टी मान 3.702 पाया गया यह मान टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता उनके विद्यालयों के स्वरूप से प्रभावित होती है।

इससे स्पष्ट होता है कि राजकीय विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्राओंकी संवेगात्मक परिपक्वता अधिक होती है।

निष्कर्ष–

पिछले अध्याय में डा० यशवीर सिंह तथा महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी उपकरण का प्रयोग करके संग्रहित किये गये। आँकडों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर व्याख्या की गयी। अतः प्रस्तुत अध्याय में विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. राजकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता अत्यधिक अस्थायी पायी गयी। तथा सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता अस्थायी पाई गयी।
2. राजकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों में अधिक असमानता पाई गयी।
3. राजकीय विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ–

1. किशोरों को संवेगात्मक विकास हेतु विद्यालय तथा घर पर लोकतन्त्रीय वातावरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
2. किशोरों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का सम्मान रखना चाहिए तथा उन्हें किये गये कार्यो के लिये प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान करने चाहिए।
3. किशोरों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का सम्मान रखना चाहिए तथा उन्हें किये गये कार्यो के लिये प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान करने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्ध सूची

- Lekhi Venita, (2005), A Study of Emotional Maturity of Adolescent in Relation to Conginitive and Non-Coognitive Variables', Punjab University, Chandigarh, p. 588-590
- Geeta and Vijay Laxmi A (2006), Study of Impact of Educational Maturity on Stress and Self Condidence of Adolescents Journal of Indian Academy of Applied Psychology, (2006), Volume-132, No.-1, Karnataka University.
- राय, पी० एन०अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (2007)
- सिंह ए०के०मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली मोती लाल बनारसी दास (2009)
- शर्मा, आर० ए०शिक्षा अनुसंधान, मेरठ आर० लाल बुक डिपो (2007)
- गुप्ता एवं गुप्ताशिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन (2008)
- कोल एल०शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्लीविकासपब्लिशिंग हाउस प्रा० लि० (2007)
- सिंह ए० के०शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन (2009)
- कपिल एच० के०सांख्यिकीय के मूल तत्व, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन्स(2008)
- गुप्ता एस० पी०आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तकभवन (2009)

- ओड़, लक्ष्मीलाल के० ''शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि'' जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1973
- पाण्डेय, रामशकल ''शैक्षिक मनोविज्ञान' मेरठ, आर०ला० बुक डिपो, 1990
- ओड़, एल०के० ''शैक्षिक प्रशासन'' जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1973
- Dhami G.S. (1974), Intellgence, Emotional Maturity and Socio Economic Status as Factor Indication of Source in Scholastic Achievement, Ph.D Edu. Punjab Universiyt in Buch M.B. 1986, Third Survey of Research in Education, New Delhi, NCERT.
- भार्गव, महेश ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षा एवं मापन'' आगरा, हरप्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशन, 1993
- कपिल, एच०के० ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 1975